डिजिटल शिक्षाः एक विकासशील समाज के लिए अवसर और चुनौतियां

डॉ सन्तोष यादव*

सारांश

शिक्षा में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करना एक जटिल मुद्दा है जो कई रूपों को लेता है जो उद्देश्य में भिन्न होते हैं। यह नए शिक्षण लक्ष्यों को लाने के लिए शिक्षा को बदलने के लिए, प्रौद्योगिकी के साथ प्रौद्योगिकी के साथ डिजिटल मीडिया के माध्यम से मौजूदा शैक्षणिक प्रथाओं की प्रतिलिपि बनाने से लेकर हो सकता है। शिक्षा शक्तिशाली और तेजी से शैक्षिक, तकनीकी और राजनीतिक ताकतों को स्थानांतरित करने के केंद्र में है जो इस शताब्दी के बाकी हिस्सों में दुनिया भर में शैक्षिक प्रणालियों की संरचना को आकार देगी। कई देश छात्रों को सूचना और प्रौद्योगिकी आधारित समाज के लिए तैयार करने के लिए शिक्षण–सीखने की प्रक्रिया में बदलाव प्राप्त करने के कई प्रयासों में लगे हुए हैं। यूनेस्को वर्ल्ड एजुकेशन रिपोर्ट (1 99 8) ने नोट किया कि नई प्रौद्योगिकियां शिक्षण और सीखने दोनों की पारंपरिक धारणाओं को चुनौती देती हैं और शिक्षकों और शिक्षार्थियों को ज्ञान तक पहुंच प्राप्त करने के तरीके के बारे में पुनः कॉन्फिगर करके, शिक्षण और सीखने की प्रक्रियाओं को बदलने की क्षमता है। आईसीटी शक्तिशाली उपकरणों की एक श्रृंखला प्रदान करते हैं जो मौजूदा पृथक, शिक्षक–केंद्रित और टेक्स्ट–बाउंड कक्षाओं को समृद्ध, छात्र केंद्रित, इंटरैक्टिव ज्ञान वातावरण में बदलने में मदद कर सकते हैं। डिजिटल युग का मतलब है कि अब कक्षाओं के लिए हमारे विचारों और गतिविधियों के सामान्य सेट के साथ–साथ कक्षा के लिए इंटरैक्टिव टूल्स हैं।

प्रस्तावना

21 वीं शताब्दी की मांगों के लिए शिक्षार्थियों की तैयारी में मौजूदा प्रतिबंधों को धक्का देने के इच्छुक प्रतिबद्ध, अभिनव शिक्षक आवश्यक हैं। यह शिक्षण और सीखने की रणनीतियों को बढ़ाने के लिए उभरती प्रौद्योगिकियों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के बारे में भी है। इस क्षेत्र में होने वाले अद्वितीय और तेज परिवर्तन शिक्षकों के लिए विभिन्न समस्याएं प्रस्तुत करते हैं जो अपने शिक्षण और सीखने, भूमिकाओं और जिम्मेदारियों, सीखने के माहौल और परिस्थितियों, बातचीत के पैटर्न, रणनीतियों और सिद्धांतों के साथ–साथ मूल्यांकन के तरीके के साथ प्रयोग करने के इच्छुक हैं। शिक्षा में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करना, नए शिक्षण लक्ष्यों को लाने के लिए शिक्षा को बदलने के लिए, प्रौद्योगिकी के साथ प्रौद्योगिकी के साथ डिजिटल मीडिया के माध्यम से मौजूदा शैक्षणिक प्रथाओं को दोहराने से लेकर हो सकता है। कक्षा में प्रौद्योगिकी शामिल करना शिक्षण–शिक्षण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण और सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है, लेकिन यह आसान नहीं है क्योंकि हमारे पास हमारे शिक्षा तंत्र में मजबूत पारंपरिक शैक्षिक प्रथाएं हैं और आईसीटी को एकीकृत करने से शिक्षक की नवीन भूमिका की मांग की जाएगी शिक्षार्थी की सक्रिय भूमिका के लिए सीखना। वर्तमान पेपर डिजिटल युग में कक्षाओं और शिक्षण–सीखने की प्रक्रिया की समस्याओं और मुद्दों पर अपना ध्यान केंद्रित करता है क्योंकि मौजूदा शैक्षिक प्रथाओं को तोड़ना और नए अनुकूलित करना आसान नहीं होगा। पेपर आगे उन तरीकों का प्रस्ताव करता है जिनके माध्यम से कक्षा में प्रभावी ढंग से आईसीटी को शामिल किया जा सकता है। पेपर शिक्षक की बदलती भूमिका के साथ–साथ प्रौद्योगिकी की दुनिया में शिक्षार्थी के बारे में भी बात करता है और उन तरीकों का सुझाव देता है जिसके माध्यम से शिक्षकों को उनकी शिक्षण–शिक्षण प्रक्रिया में तकनीकी उपकरणों का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। इंटरनेट, मोबाइल फोन, मोबाइल ऐप, टैबलेट, लैपटॉप और अन्य आधुनिक उपकरणों के विकास के साथ, आज की दुनिया में चीजें अधिक से अधिक डिजिटल हो रही हैं। भारत के महानगरों और अन्य शहरों में शिक्षा प्रणाली भी काफी हद तक आधुनिकीकृत हो गई है, जो डिजिटलकरण के लिए रास्ता बना रही है। कई अंतरराष्ट्रीय स्कूल आने के साथ, डिजिटल शिक्षा भारत की शिक्षा प्रणाली में अपना रास्ता बना रही है और पारंपरिक कक्षा प्रशिक्षण की जगह ले रही है।

*प्राचार्या, कर्मभूमि टी. टी. कॉलेज, गूंती (बहरोड़) अलवर (राजस्थान)

डिजिटल शिक्षा और कक्षा कक्ष शिक्षा के बीच बुनियादी अंतर

उन दिनों में चला गया जब कक्षा प्रशिक्षण पाठ्यपुस्तक सीखने तक सीमित था, शिक्षकों ने चीजों को समझाने के लिए ब्लैकबोर्ड का उपयोग किया और छात्रों ने प्रतियों में नोट लिखना शुरू किया। सीखने के लिए शिक्षण और कार्य–आधारित दृष्टिकोणों के पारंपरिक शिक्षक–केंद्रित तरीके नोट्स और यादगार बनाने पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। हालांकि, यह ज्यादातर स्कूलों में चाक और बात नहीं है। पीपीटी, वीडियो प्रस्तुतिकरण, ई–लर्निंग विधियों, व्यावहारिक डेमो, ऑनलाइन प्रशिक्षण और अन्य डिजिटल तरीकों या प्लेटफॉर्म जैसे डिजिटल तरीकों के उपयोग के साथ आजकल कक्षा अध्यापन अधिक से अधिक संवादात्मक हो गया है।

शिक्षक के नेतृत्व वाले कक्षा प्रशिक्षण के लाभ

छात्रों को अध्ययन सामग्री की एक बड़ी मात्रा पेश करने का यह एक प्रभावी तरीका है।
यह एक व्यक्तिगत, आमने–सामने का प्रशिक्षण है।
सभी को एक ही समय में एक ही जानकारी मिलती है।
यह लागत प्रभावी है।

शिक्षक के नेतृत्व वाले कक्षा प्रशिक्षण के नुकसान

कभी–कभी यह इंटरैक्टिव नहीं है।
व्याख्यान की सफलता शिक्षक की प्रभावशीलता पर निर्भर करती है।
अपने धातु कौशल और क्षमताओं को बढ़ाने के बजाय, छात्रों के लिए याद रखने में अधिक समय लेना

डिजिटल शिक्षा बच्चे को कैसे लाभ पहुंचाती है?

इंटरएक्टिवः डिजिटल शिक्षा के साथ, कक्षा की शिक्षाएं अधिक मजेदार और इंटरैक्टिव बन गई हैं। बच्चे अधिक चौकस होते हैं। वे न केवल सुन रहे हैं बल्कि इसे स्क्रीन पर भी देख रहे हैं जो उनके सीखने को और अधिक प्रभावी बनाता है। यहां, ध्वनि और दृश्य हाथ में जाते हैं जो बच्चे को समझने में आसान होता है।

विवरणों पर ध्यान देंः इंटरेक्टिव ऑनलाइन प्रस्तुतियों या इंटरैक्टिव स्क्रीन समय के माध्यम से शैक्षिक सामग्री में व्यावहारिक सत्र छात्रों को विवरणों पर अधिक ध्यान देने में मदद करते हैं जो उन्हें अपनी गतिविधियों को पूरा करने में सक्षम बनाता है।

त्वरित समापनः पेन और पेंसिल के बजाए टैब, लैपटॉप या नोटपैड का उपयोग करके, बच्चों को अपने कार्यों को जल्दी से पूरा करने के लिए प्रेरित करता है।

शब्दावलीः सक्रिय ऑनलाइन स्क्रीन समय छात्रों को भाषा कौशल विकसित करने में मदद करता है। ईबुक पढ़ने या ऑनलाइन अध्ययन सामग्री तक पहुंचकर, वे नए शब्द सीखते हैं और अपनी शब्दावली का विस्तार करते हैं।

अपनी गति से जानेंः कई बार, एक छात्र कक्षा के प्रशिक्षण में अपने शिक्षक को एक प्रश्न पूछने में हिचकिचाता है। लेकिन डिजिटल शिक्षा के साथ, भले ही वह किसी भी समय कुछ भी समझ में नहीं आता है, फिर भी वह अपने संदेहों को दूर करने के लिए दर्ज सत्रों में भाग ले सकता है। प्रौद्योगिकी एक छात्र को अपनी गति से सीखने में सक्षम बनाता है।

उपयोगकर्ता के अनुकूलः डिजिटल शिक्षा के बारे में सबसे अच्छी बात यह है कि यह उपयोगकर्ता के अनुकूल है। आप जहां भी हों, आप अपने पाठ्यक्रम तक बहुत अच्छी तरह से पहुंच सकते हैं। आप यात्रा पर सीख सकते हैं। यहां तक कि यदि आप कुछ कक्षाओं को याद करते हैं, तो आप कक्षा की टिप्पणियों तक पहुंच सकते हैं और स्कूल की वेबसाइट से फाइल डाउनलोड कर सकते हैं।

अपने आप सीखेंः इसके अलावा, आजकल, ऑनलाइन अध्ययन सामग्री आसानी से उपलब्ध हैं। यहां तक कि अगर पूरी शिक्षा प्रणाली को डिजिटल नहीं किया गया है, फिर भी छात्र अपनी क्षमताओं के आधार पर डिजिटल सामग्री की शक्ति का लाभ उठा सकते हैं। तो छात्र, विभिन्न विषयों के अनन्य ऑनलाइन अध्ययन मॉड्यूल तक पहुंच सकते हैं, जो उन्हें शिक्षक के बिना भी अपना ज्ञान बढ़ाने में मदद करते हैं।

बाहरी मार्गदर्शनः ऑनलाइन शिक्षा के साथ, छात्र मार्गदर्शन या समाधान पूछने के लिए दूरस्थ सलाहकारों और संकाय के साथ और भी आगे जुड़ सकते हैं।

बच्चों के लिए डिजिटल शिक्षा के नुकसान

महंगाः सबसे पहले, यह महंगा है। यही कारण है कि

हम देखते हैं कि डिजिटल स्कूलों वाले अधिकांश अंतर्राष्ट्रीय स्कूल और स्कूल नियमित स्कूलों की तुलना में कहीं अधिक महंगी हैं।

बुनियादी ढांचा: डिजिटल शिक्षा का मतलब है, आपको न केवल स्कूलों पर बल्कि घरों, विशेष रूप से किफायती ब्रॉडबैंड पर उचित आधारभूत संरचना की आवश्यकता है।

कोई निश्चित कार्यक्रम नहीं: ऑनलाइन सीखने के लिए बेहतर प्रबंधन और कठोर कार्यक्रमों की आवश्यकता होती है, जबकि पारंपरिक कक्षा प्रशिक्षण में, सब कुछ एक निश्चित अनुसूची के अनुसार होता है।

रचनात्मक क्षमताओं को कम करता है: नेट पर सभी उत्तरों को आसानी से प्राप्त करना बच्चों की अपनी रचनात्मक क्षमताओं को भी कम करता है।

अध्ययन के लिए आलसी दृष्टिकोण: इससे खराब अध्ययन आदतें हो सकती हैं और बच्चों में आलसी रवैया विकसित हो सकता है। डिजिटल शिक्षा बच्चों को अध्ययन का मूल तरीका भी भूल सकती है। यहां तक कि सरल समस्याओं और होमवर्क के लिए, नेट का उपयोग करने के लिए उनका उपयोग किया जाता है।

सुरक्षा: आखिरी लेकिन कम से कम नहीं, ऑनलाइन जाने का मतलब यह नहीं है कि आपका बच्चा केवल अध्ययन सामग्री की तलाश में है। ऐसी कई चीजें हैं जिन पर एक बच्चा आ सकता है जो उनके लिए अच्छा नहीं है।

निष्कर्ष

स्कूल आज दुनिया की सेवा करते हैं और आकार देते हैं जिसमें लोग बढ़ने का शानदार अवसर ले सकते हैं यदि लोग रचनात्मक और सहयोगी तरीके से काम करना सीख सकें। फिर भी, रचनात्मकता और विशिष्टता को बढ़ावा देने के बजाय, अधिक से अधिक स्कूल सिस्टम परंपरागत पाठ्यचर्या एकरूपता और शैक्षणिक प्रथाओं से जुड़े हुए हैं। स्कूलों और शिक्षकों को टेस्ट स्कोर और उपलब्धि लक्ष्यों के वेब में शामिल किया गया है। बड़े पैमाने पर, हमारे स्कूल युवा लोगों को न तो काम करने और न ही इस डिजिटल युग में अच्छी तरह से रहने के लिए तैयार कर रहे हैं।

इक्कीसवीं शताब्दी शिक्षण अब कक्षा की चार दीवारों के बारे में नहीं है। प्रौद्योगिकी ने शिक्षण–सीखने की प्रक्रिया के क्षेत्र को बढ़ा दिया है क्योंकि शिक्षार्थियों के पास जानकारी की विशाल दुकान तक पहुंच है यानी इंटरनेट और उनके पास इस कारण से बहुत सारे प्रश्न हैं। इसलिए, शैक्षिक प्रथाओं को जरूरी रूप से बदला जाना चाहिए और सीखने वालों को जवाब खोजने के अवसर प्रदान करने के लिए पर्याप्त सक्षम होना चाहिए। यह भी एक तथ्य है कि शिक्षण हमेशा अपनी परिस्थितियों को विधिवत और शारीरिक रूप से अनुकूलित किया जाता

संदर्भ ग्रन्थ सूची

चर्चिल, डी। (2006): शिक्षक के निजी सिद्धांत और प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा के उनके डिजाइनय ब्रिटिश जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी, 37 (4): पी। 559–576।

डे, बी, सक्सेना, केएम और गिहार, एस। (2005), सूचना और संचार प्रौद्योगिकी और शिक्षक शिक्षा: एक अनुभवजन्य अध्ययनः जर्नल ऑफ एजुकेशन, वॉल्यूम। 1 (2), पीपी.60–63

गार्डनर, एच। (1 9 83): दिमाग के फ्रेम्सः एकाधिक सिद्धांतों का एक सिद्धांतय बेसिक बुक्सः न्यूयॉर्क।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचा (2005): राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदः नई दिल्ली।

यूनेस्को वर्ल्ड एजुकेशन रिपोर्ट (1 99 8): यूनाइटेड नेशन।